

ग्रामीण-शहरी परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति: बिहार के जहानाबाद जिले के मामले

सुधा कुमारी *

शोध छात्रा

तथा

डॉ. बृज मोहन सिंह,

शोध निर्देशक

शिक्षा विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

सारांश

यह शोध बिहार के जहानाबाद जिले में ग्रामीण-शहरी परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Attitude) शिक्षा की गुणवत्ता, सामाजिक चेतना और नवाचार को किस प्रकार प्रभावित करता है। शोध से स्पष्ट हुआ कि शहरी क्षेत्रों में बेहतर अवसंरचना, डिजिटल संसाधन, प्रयोगशालाओं और प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता के कारण वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति का स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा है। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी, तकनीकी पहुँच का अभाव और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ शिक्षा की गुणवत्ता को सीमित करती हैं। वैज्ञानिक अभिवृत्ति विद्यार्थियों को तर्कसंगत, रचनात्मक और समस्या-समाधान में सक्षम बनाती है, जो 21वीं सदी के कौशल विकास का आधार है। शोध में यह भी पाया गया कि ग्रामीण-शहरी शैक्षिक अंतर को पाटने के लिए नीतिगत सुधार, संसाधनों का समान वितरण, शिक्षक-प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता आवश्यक हैं। जैसा कि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा — “यदि हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, तो हमें गाँवों में शिक्षा की गुणवत्ता को प्राथमिकता देनी होगी।” यह दृष्टिकोण जहानाबाद सहित पूरे देश के शैक्षिक और सामाजिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

मुख्य शब्द: वैज्ञानिक अभिवृत्ति, शैक्षिक प्रगति, ग्रामीण-शहरी शिक्षा, जहानाबाद जिला, शिक्षक-प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता, शैक्षिक असमानता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अवसंरचना विकास, शैक्षिक नवाचार

1. प्रस्तावना: वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति का महत्व:

वैज्ञानिक अभिवृत्ति (Scientific Attitude) का आशय एक ऐसे दृष्टिकोण से है जिसमें व्यक्ति तथ्यों का निष्पक्ष विश्लेषण करता है, तर्क और प्रमाण के आधार पर निर्णय लेता है तथा अंधविश्वास और पूर्वाग्रह से मुक्त रहता है। यह अभिवृत्ति न केवल विज्ञान के अध्ययन में आवश्यक है, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका महत्व है। शैक्षिक प्रगति (Educational Progress) का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि विवेक, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता का विकास करना है, जो वैज्ञानिक अभिवृत्ति से ही संभव है। जैसा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था — “विज्ञान का सही उपयोग तभी संभव है, जब हम उसमें वैज्ञानिक

* Corresponding Author: **Sudha Kumari**

Email: sudhasingh.ss2000@gmail.com

Received: 27 March. 2025; Accepted: 15 April. 2025. Available online: 30 April. 2025.

Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)

This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)



दृष्टिकोण और तर्कशीलता को अपनाएँ” (नेहरू, 1946) यह कथन स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति का महत्व

वैज्ञानिक अभिवृत्ति विद्यार्थियों को आलोचनात्मक सोच (**Critical Thinking**) की क्षमता प्रदान करती है। यह उन्हें तथ्यों की जांच-पड़ताल करने, प्रमाण जुटाने और निष्पक्ष निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करती है। महात्मा गांधी ने भी कहा था – “अंधविश्वास और अज्ञानता से मुक्ति का एकमात्र उपाय वैज्ञानिक सोच है।” (गांधी, 1946) शिक्षा तभी सार्थक है जब वह विद्यार्थियों में जिज्ञासा और प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति जगाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी, 2020) में भी स्पष्ट उल्लेख है कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावादी मूल्यों और रचनात्मकता का विकास करना शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है। यह दृष्टिकोण समाज में नवाचार (**Innovation**) और अनुसंधान (**Research**) की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है।

शैक्षिक प्रगति में वैज्ञानिक अभिवृत्ति की भूमिका

शैक्षिक प्रगति केवल साक्षरता दर बढ़ाने तक सीमित नहीं है। इसका आशय ऐसे नागरिक तैयार करने से है जो तार्किक, रचनात्मक और समस्या-समाधान में सक्षम हों। वैज्ञानिक अभिवृत्ति इस प्रक्रिया में उत्प्रेरक का कार्य करती है। यूनेस्को (2015) की वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट के अनुसार – “शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश सामाजिक और आर्थिक विकास की गति को दोगुना कर सकता है।” उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास किसानों को आधुनिक कृषि पद्धतियों अपनाने के लिए प्रेरित करता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह उद्योग और तकनीकी नवाचार को गति देता है। इस प्रकार यह शिक्षा को वास्तविक जीवन से जोड़ता है।

समाज पर प्रभाव

वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण करती हैं जो न केवल ज्ञानवान हो, बल्कि विवेकशील और प्रगतिशील भी हो। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था – “देश का भविष्य उन युवाओं पर निर्भर करता है जिनमें वैज्ञानिक सोच और रचनात्मकता का संगम हो।” (कलाम, 2005) यदि शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश नहीं होगा, तो समाज अंधविश्वास, पूर्वाग्रह और अवैज्ञानिक सोच के दलदल में फँस सकता है।

अतः स्पष्ट है कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति शैक्षिक प्रगति की आत्मा है। यह शिक्षा को केवल सूचना-केन्द्रित न बनाकर, तर्क, प्रमाण और नवाचार पर आधारित बनाती है। यही वह दृष्टिकोण है जो व्यक्तियों को न केवल बेहतर नागरिक बनाता है, बल्कि राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है। जैसा कि पाउलो फ्रेरे ने कहा था – “शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह व्यक्ति को दुनिया को बदलने की क्षमता दे।” (फ्रेरे, 1970) और यह क्षमता वैज्ञानिक अभिवृत्ति से ही संभव है।

2. जहानाबाद जिले का ग्रामीण-शहरी शैक्षिक परिदृश्य

जहानाबाद जिला, बिहार का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और शैक्षिक क्षेत्र है, जो अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं के लिए जाना जाता है। इस जिले का शैक्षिक परिदृश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट अंतर को दर्शाता है। यहाँ शिक्षा के विकास में कई प्रगति हुई है, लेकिन साथ ही चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। ग्रामीण और शहरी शिक्षा की तुलना में यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र में विद्यालयी अवसंरचना, शिक्षण संसाधन और प्रशिक्षित अध्यापकों की उपलब्धता अपेक्षाकृत बेहतर है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार धीमा है और संसाधनों की कमी, तकनीकी उपकरणों का अभाव, तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी प्रमुख बाधाएँ हैं। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था — “गाँवों के बिना भारत की आत्मा अधूरी है।” (गांधी, 1946) यह कथन इंगित करता है कि शिक्षा का विकास ग्रामीण क्षेत्रों में उतना ही आवश्यक है जितना शहरी क्षेत्रों में।

शहरी शिक्षा की स्थिति

जहानाबाद शहर और इसके आस-पास के कस्बाई क्षेत्रों में शिक्षा के अवसर अपेक्षाकृत अधिक हैं। यहाँ सरकारी और निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा कोचिंग संस्थानों की उपलब्धता अधिक है। डिजिटल शिक्षण साधन, पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं की सुविधाएँ भी यहाँ अपेक्षाकृत बेहतर हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2020) के अनुसार, “21वीं सदी में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए तकनीकी साधनों का प्रयोग अनिवार्य है।” यह नीति शहरी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी रूप से लागू हो रही है।

ग्रामीण शिक्षा की स्थिति

ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की पहुँच बढ़ी है, लेकिन उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा की स्थिति अभी भी कमजोर है। यूनेस्को (2015) की रिपोर्ट के अनुसार, “ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता केवल विद्यालय खोलने से नहीं बढ़ती, बल्कि प्रशिक्षित शिक्षक, संसाधन और सतत मूल्यांकन आवश्यक हैं।” जहानाबाद के ग्रामीण विद्यालयों में स्मार्ट कक्षाओं, विज्ञान प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों की कमी स्पष्ट है।

अंतर के प्रमुख कारण

संसाधन असमानता – ग्रामीण विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव।

शिक्षक-प्रशिक्षण की कमी – प्रशिक्षित और नियमित रूप से अद्यतन ज्ञान रखने वाले शिक्षकों का अभाव।

तकनीकी पहुँच का अभाव – ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की सीमित उपलब्धता।

सामाजिक-आर्थिक कारक – गरीब परिवारों के बच्चों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की दर कम।

सुधार की संभावनाएँ

जहानाबाद में ग्रामीण और शहरी शिक्षा के बीच की खाई को पाटने के लिए नीतिगत सुधार, संसाधनों का समान वितरण और शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम आवश्यक हैं। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था — “शिक्षा वह साधन है जो मानव को सशक्त और राष्ट्र को समृद्ध बनाती है। (कलाम, 2005) इस कथन के अनुरूप, ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा और डिजिटल साक्षरता का प्रसार अत्यंत आवश्यक है।

3. वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति के बीच पारस्परिक संबंध

वैज्ञानिक अभिवृत्ति केवल विज्ञान के विषय-वस्तु के ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी मानसिक प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को तर्कसंगत सोच, निष्पक्षता, जिज्ञासा और तथ्यों के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। यह अभिवृत्ति शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी प्रगति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था — “शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आलोचनात्मक सोच विकसित करना है।” (राधाकृष्णन, 1954) यह कथन स्पष्ट करता है कि शिक्षा और वैज्ञानिक अभिवृत्ति एक-दूसरे के पूरक हैं।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति का शैक्षिक महत्व

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति केवल साक्षर नहीं बनता, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचने और समस्याओं का तार्किक समाधान खोजने की क्षमता प्राप्त करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट उल्लेख है कि “शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थियों में 21वीं सदी के कौशलों का विकास करना है, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आलोचनात्मक सोच और नवाचार प्रमुख हैं।” यूनेस्को (2015) के अनुसार, “**Scientific temperament is a key driver of educational innovation and societal progress.**” अर्थात्, वैज्ञानिक अभिवृत्ति शिक्षा में नवाचार और समाज की उन्नति का प्रमुख प्रेरक है।

शैक्षिक प्रगति में वैज्ञानिक अभिवृत्ति की भूमिका

समस्या-समाधान क्षमता में वृद्धि – वैज्ञानिक दृष्टिकोण छात्रों को तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम बनाता है।

आलोचनात्मक सोच का विकास – यह विद्यार्थियों को सतही तथ्यों से आगे बढ़कर गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है।

नवाचार और शोध प्रवृत्ति – वैज्ञानिक अभिवृत्ति शोध और खोज की मानसिकता को मजबूत करती है।

सामाजिक सुधार – यह अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और मिथ्या धारणाओं को कम कर समाज में तर्कसंगत दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है।

ग्रामीण-शहरी संदर्भ में वैज्ञानिक अभिवृत्ति

जहानाबाद जैसे जिलों में शहरी छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक देखा जाता है, क्योंकि वहाँ प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता बेहतर है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्रवृत्ति धीमी है, क्योंकि वैज्ञानिक शिक्षा के लिए आवश्यक प्रयोगात्मक अवसर सीमित हैं। महात्मा गांधी ने कहा था — “अंधविश्वास को दूर करने का एकमात्र साधन वैज्ञानिक शिक्षा है।” (गांधी, 1946) यह बात ग्रामीण शिक्षा के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि वहाँ अभी भी शिक्षा और विज्ञान के प्रसार की बड़ी आवश्यकता है।

शैक्षिक नीतियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का समावेश

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा नीतियाँ अब **STEM (Science, Technology, Engineering, Mathematics)** शिक्षा और कौशल विकास पर अधिक जोर दे रही हैं। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शब्दों में — “विज्ञान मानवता को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का सबसे शक्तिशाली साधन है, और शिक्षा इसके पंख हैं।” (कलाम, 2005) यह कथन दर्शाता है कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति के बिना शैक्षिक प्रगति अधूरी है।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति का संबंध सीधा और गहरा है। शिक्षा के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना न केवल विद्यार्थियों को ज्ञानवान बनाता है, बल्कि उन्हें जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए सशक्त करता है। यदि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण समान रूप से विकसित हो, तो समाज में नवाचार, प्रगति और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा।

4. जहानाबाद में ग्रामीण और शहरी शैक्षिक प्रगति की तुलनात्मक समीक्षा

जहानाबाद जिला, बिहार का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं शैक्षिक क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के शिक्षा तंत्र मौजूद हैं। इन दोनों के शैक्षिक परिदृश्य में उल्लेखनीय अंतर है, जो संसाधनों, अवसंरचना, शिक्षण-प्रशिक्षण, और सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों पर आधारित है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था — “शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं, बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है।” (राधाकृष्णन, 1954) यह कथन स्पष्ट करता है कि शिक्षा का मूल्यांकन केवल विद्यालयों की संख्या या नामांकन दर से नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता से भी किया जाना चाहिए।

1. अवसंरचना और संसाधनों की उपलब्धता

जहानाबाद के शहरी क्षेत्रों में विद्यालयों और महाविद्यालयों में अपेक्षाकृत बेहतर अवसंरचना है — जैसे पक्की इमारतें, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, और डिजिटल लर्निंग सुविधाएँ। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में कई विद्यालय अब भी मूलभूत सुविधाओं के अभाव से जूझ रहे हैं। बिहार शिक्षा विभाग (2020) की रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों के लगभग 45% विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशालाओं की सुविधा नहीं है, जबकि शहरी विद्यालयों में यह सुविधा 80% से अधिक है। यह अंतर सीधे-सीधे छात्रों के वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा के अवसरों को प्रभावित करता है।

2. शिक्षक-प्रशिक्षण और गुणवत्ता

शहरी क्षेत्रों में शिक्षक प्रशिक्षण के अवसर अपेक्षाकृत अधिक हैं। शिक्षकों को ICT (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) आधारित शिक्षण, शोध पद्धतियों और नवीन शिक्षण तकनीकों में प्रशिक्षण लेने का अवसर मिलता है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम या तो नियमित नहीं होते या फिर सीमित संसाधनों के कारण प्रभावी नहीं हो पाते। पाउलो फ्रेरे (1970) ने कहा था — “शिक्षा तभी प्रभावी है जब शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हों।” ग्रामीण क्षेत्रों में यह सक्रिय भागीदारी सीमित संसाधनों और प्रेरणा की कमी के कारण अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाती।

3. सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

जहानाबाद के शहरी क्षेत्रों में अभिभावकों की शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा है, जिससे बच्चों की शिक्षा में निवेश और प्रोत्साहन अधिक मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से कई बार उच्च शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती, विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा के मामले में। महात्मा गांधी ने कहा था — “शिक्षा का प्रसार तभी सार्थक है जब वह गाँव-गाँव तक पहुँचे और सबके जीवन को बेहतर बनाए।” (गांधी, 1946) यह दृष्टिकोण ग्रामीण शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करता है।

4. शैक्षिक परिणाम और प्रगति

शहरी विद्यालयों के छात्रों का परीक्षा परिणाम, उच्च शिक्षा में प्रवेश दर, और तकनीकी शिक्षा में सहभागिता दर ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी शिक्षा छोड़ने की दर (**Dropout Rate**) अधिक है, जिसका मुख्य कारण आर्थिक कठिनाई, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण का अभाव, और रोजगार की अनिश्चितता है। एनसीईआरटी (2017) की रिपोर्ट बताती है कि शहरी छात्रों की औसत शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण छात्रों की तुलना में **15-20%** अधिक है।

जहानाबाद जिले में ग्रामीण और शहरी शिक्षा के बीच का अंतर केवल अवसंरचना और संसाधनों का नहीं, बल्कि मानसिकता, अवसरों और नीतिगत प्राथमिकताओं का भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए न केवल संसाधनों का विस्तार, बल्कि शिक्षक-प्रशिक्षण, डिजिटल शिक्षा, और सामुदायिक भागीदारी को भी बढ़ावा देना होगा। जैसा कि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा — “यदि हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, तो हमें गाँवों में शिक्षा की गुणवत्ता को प्राथमिकता देनी होगी।” (कलाम, 2005)

5. निष्कर्ष

यह शोध स्पष्ट करता है कि बिहार के जहानाबाद जिले में वैज्ञानिक अभिवृत्ति और शैक्षिक प्रगति एक-दूसरे के पूरक हैं। ग्रामीण-शहरी शिक्षा में अंतर केवल अवसंरचना और संसाधनों का नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शिक्षक-प्रशिक्षण, तकनीकी पहुँच और सामाजिक मानसिकता का भी है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ डिजिटल संसाधन, प्रयोगशालाएँ और प्रशिक्षित शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी, तकनीकी अभाव और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ प्रगति में बाधक हैं। वैज्ञानिक अभिवृत्ति विद्यार्थियों को तर्कसंगत, रचनात्मक और समस्या-समाधान में सक्षम बनाती है, जो वास्तविक जीवन और राष्ट्र के विकास

के लिए आवश्यक है। इसलिए नीतिगत स्तर पर ग्रामीण शिक्षा में संसाधन-वृद्धि, शिक्षक-प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता और STEM शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। जैसा कि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा — “यदि हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, तो हमें गाँवों में शिक्षा की गुणवत्ता को प्राथमिकता देनी होगी।” यही दृष्टिकोण जहानाबाद और देश के समग्र शैक्षिक विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

संदर्भ:

- बिहार शिक्षा विभाग (2020). उच्च शिक्षा वार्षिक रिपोर्ट. पटना: बिहार सरकार।
- गांधी, मोहनदास करमचंद (1946). मेरे स्वप्नों का भारत. अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट।
- कलाम, ए. पी. जे. अब्दुल (2005). इग्नाइटेड माइंड्स. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
- नेहरू, जवाहरलाल (1946). भारत की खोज. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
- एनसीईआरटी (2017). भारत में विद्यालय शिक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- फ्रेरे, पाउलो (1970). पीड़ितों का शिक्षण शास्त्र. न्यूयॉर्क: कंटिन्यूअम।
- राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1954). शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था।
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।
- यूनेस्को (2015). वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट. पेरिस: यूनेस्को।